B - III
L - 18
MIH

1854 का वुड्स डिस्पैच :-

BOC - अध्यक्ष , भारत सचिव

- भारत में शिक्षा के विकास में इसे मैग्नाकार्टा कहा जाता है
- भारत में शिक्षा का उद्देश्य है अंग्रेजी भाषा में पाश्चात्य शिक्षा का विकास, हालांकि भारतीय भाषा में प्राथमिक शिक्षा के विकास की भी बात की गई।
- प्रत्येक प्रांत में शिक्षा विभाग का गठन।
- शिक्षकों के प्रशिक्षण का प्रावधान, महिला शिक्षा एवं तकनीकी शिक्षा के विकास की भी अनुशंसा।
- शैक्षणिक संस्थाओं के लिए अनुदान का प्रावधान।
- लंदन विश्वविद्यालय के तर्ज पर बाम्बे, कलकत्ता एवं मद्रास में विश्वविद्यालय की स्थापना

नोट :-

इस डिस्पैच में अधोगामी निस्पंदन नीति को छोड़ने की घोषणा भी की गई।

- 1858 तक कुछ और स्कूलों एवं कालेज की स्थापना की गई।

जैसे बंगाल एवं मद्रास में इंजीनियरिंग कालेज

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

की स्थापना।

• 1857 में बाम्बे, कलकत्ता एवं मद्रास में विश्वविद्यालय की स्थापना।

मूल्यांकन या आकलन :-

सकारात्मक पहलू :-

• इस चरण में विलम्ब से ही सही शिक्षा के सर्वांगीण विकास के लिए नीतिगत पहल की गई।

• स्कूली शिक्षा से लेकर विश्वविद्यालय शिक्षा एवं तकनीकी शिक्षा के लिए भी कदम उठाए गए।

• सरकार ने पहली बार 1913 में शिक्षा के विकास को दायित्व के रूप में स्वीकार किया।

• सैद्धांतिक तौर पर ही सही अधोगामी नीति को छोड़ने की घोषणा की गई।

• इस दौर से संबंधित कई शैक्षणिक संस्थाएँ आज भी मौजूद हैं।

आलोचनात्मक पहलू

• शिक्षा के क्षेत्र में जो परिवर्तन का निर्णय लिया गया, उसका विशेष संबंध था ब्रिटिश औपनिवेशिक हितों से न कि भारत के आधुनिकीकरण से।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

- ब्रिटिश औद्योगिक क्रान्ति के कारण भारत में बाजार के विकास के लिए अंग्रेजी जानने वाले ट्रांसलेटर की आवश्यकता थी तथा प्रशासन में सस्ते क्लर्क की भी, इसीलिए इस चरण में मुख्य बल स्कूली शिक्षा पर था न कि उच्च शिक्षा पर।
- अधोगामी नीति भी इस तथ्य को प्रमाणित करती है कि कंपनी भारत में शिक्षा का सीमित विकास चाहती थी।
- प्रारम्भ में शिक्षा के विकास के लिए एक लाख रुपये निर्धारित किए गए थे, विवाद के कारण लम्बे समय तक इस पैसे को खर्च नहीं किया गया। यह तथ्य भी शिक्षा के विकास को लेकर अंग्रेजों की नियत पर प्रश्न तो खड़े करते हैं या संदेह उत्पन्न करते हैं
- सैद्धांतिक तौर पर वुड्स डिस्पैच में महिला शिक्षा एवं तकनीकी शिक्षा का समर्थन तो किया गया लेकिन व्यवहार में इसके लिए कोई विशेष कदम नहीं उठाए गए। तकनीकी संस्थाओं में भारतीयों के साथ भेदभाव भी किया गया।
- ब्रिटिश काल में महिला शिक्षा के साथ-साथ आम लोगों की शिक्षा की उपेक्षा भी की गई।
- कम्पनी का संसाधनों पर नियंत्रण था इससे स्वदेशी शिक्षा संस्थाओं को भी नुकसान हुआ।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

- भारत में अंग्रेजों की शिक्षा के क्षेत्र में क्षेत्रीय एवं वर्गीय भेदभाव भी बढ़ा, ग्रामीण भारत एवं आर्थिक रूप से कमजोर लोग शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ने लगे।

- प्रश्न: कम्पनी के शासन काल में कम्पनी की शिक्षानीति का मूल्यांकन करें?

प्रश्न: ब्रिटिश भारत में कम्पनी की शिक्षा नीति औपनिवेशिक हितों से संचालित थी। इस कथन का परीक्षण कीजिए?

प्रश्न: ब्रिटिश भारत में कंपनी की शिक्षा नीति पर निबंध लिखें?

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

तृतीय चरण – 1858 - 1947 के मध्य

• **1882-83 – हंटर शिक्षा आयोग** – प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा के सन्दर्भ में सुझाव देना।
- वुड्स डिस्पैच की प्रगति की समीक्षा करना।

• **कर्जन के काल में** –

(1899 - 1905) - 1901 में शिमला में उच्च शिक्षा के लिए एक सम्मेलन बुलाया गया।
- इसके पश्चात् थामस रैले की अध्यक्षता में एक आयोग गठित किया गया।
- 1904 में भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम पारित किया गया और विश्वविद्यालयों पर सरकारी नियंत्रण बढ़ा दिया गया।
- 1913 में एक सरकारी प्रस्ताव निःशुल्क शिक्षा के सन्दर्भ में पारित किया गया।
- 1917 - सैडलर आयोग (इसमें दो भारतीय भी थे)
  - कलकत्ता विश्वविद्यालय पर सरकारी नियंत्रण की आलोचना की।
- 1929 - हार्टोग समिति - इसको शिक्षा के विकास के सुझाव के लिए जाना जाता है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

1937 - शिक्षा की वर्धा योजना -

- जाकिर हुसैन समिति की अनुशंसा पर प्रांतीय सरकारों के द्वारा लागू करने का प्रयास किया गया।
- यह गांधी जी के बेसिक शिक्षा पर आधारित था जिसमें मातृभाषा में शिक्षा एवं व्यवसायिक शिक्षा पर विशेष बल था।

1944 - सार्जेंट योजना -

- 6 - 11 वर्ष तक के बच्चों के लिए निःशुल्क शिक्षा का सुझाव।

1948 - राधाकृष्णन आयोग - डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन के द्वारा इस आयोग का गठन किया गया

1953 - में इन्ही के द्वारा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) का गठन किया गया।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

ब्रिटिश काल में समाज सुधार कानून

सामाज सुधार कानून :-

- 1795 और 1804 ई० में शिशु हत्या को रोकने के लिए कानून बनाया गया।
- 1829 ई० में सती प्रथा को रोकने के लिए कानून बनाया गया। (राम मोहन राय)
- 1843 ई० में दास प्रथा को रोकने के लिए कानून।
- 1844 ई० में मानव बलि प्रथा को रोकने के लिए कानून।
- 1856 ई० में विधवा पुनर्विवाह कानून।
- 1872 ई० में ब्रह्म विवाह कानून -(केशव चन्द्र सेन)
  लड़कों के लिए विवाह की उम्र - 18
  लड़कियों के लिए विवाह की उम्र - 14
- 1891 में सम्मति आयु अधिनियम
  लड़कियों की विवाह - 12 वर्ष.
- 1930 में शारदा अधिनियम
  लड़कों की विवाह आयु - 18 वर्ष
  लड़कियों की विवाह आयु - 14 वर्ष
  - हरविलास शारदा की बड़ी भूमिका थी इस कानून को निर्मित कराने में।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Trusted Learning Partner

संक्षिप्त मूल्यांकन

- ब्रिटिश काल में जिन सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए कानून बनाए गए उन कुरीतियों का प्रचलन भारत में हजारों वर्षों से था।
- इन कुरीतियों को दूर करने के लिए अंग्रेजों के द्वारा बनाए गए कानून निश्चित तौर पर एक साहसिक कार्य था।
- यह मानवीय दृष्टिकोण से भी एक महत्वपूर्ण कदम था।
- महिलाओं की मुक्ति तथा आधुनिक समाज के संक्रमण के दृष्टिकोण से भी ये कानून महत्त रखते हैं।
- हालांकि तस्वीर का एक दूसरा पहलू भी है अंग्रेजों के द्वारा कानूनों का निर्माण तो किया गया लेकिन इसे प्रभावी तरीके से क्रियान्वित नहीं किया गया।
- इन कानूनों के निर्माण के दौरान भारतीय बुद्धजीवियों का भी सहयोग मिला।
- ब्रिटिश सरकार इन समाज सुधार कानूनों को 1857 के विद्रोह का एक महत्वपूर्ण कारण मानती थी। और 1857 के पश्चात सरकार के द्वारा समाज सुधार कानूनों की उपेक्षा की गई।
- न केवल अंग्रेजों ने इसकी उपेक्षा की बल्कि

भारतीयों को विभाजित करने के लिए जाति एवं धर्म के नाम पर लड़ाने का प्रयास भी किया।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR